नवजात पशु की मृत्यु दर कम करने के उपाय

डेयरी व्यवसाय की सफलता नवजात पशु के स्वास्थ्य पर आधारित होती है। नवजात पशुओं में रोगों का सीधा सम्बन्ध उत्तम देखभाल से होता है। कटड़े-कटड़ियों में जन्म से 3 महीने तक मृत्यु दर अधिक होती है। अधिकतर मृत्यु कुपोषण, कुप्रबन्धन तथा विभिन्न रोगों के कारण होती है।

निम्नलिखित उपायों द्वारा नवजात पशु की मृत्यु दर कम की जा सकती है-

जन्म के तुरन्त बाद नवजात की देखभाल :

जन्म के तत्काल बाद नाक और मुंह साफ करना चाहिए। नवजात की छाती पर धीरे-धीरे मालिश करें जिससे कि उसे साँस लेने में आसानी रहे। पूरे शरीर को अच्छी तरह साफ करना चाहिए। कभी-कभी नवजात पशु के श्वसन तंत्र में बलगम भरे होने के कारण उसका दम घुटने लगता है। ऐसे में कटड़े-कटड़ी के पिछले घुटनों को पकड़कर उल्टा कर देना चाहिए ताकि श्लेष्मा स्वयं बाहर निकल जाये ।

साधारण हालात में नवजात 15-30 मिनट में अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। यदि बच्चा उठने में कठिनाई महसूस करे तो उसे उठने में सहायता करनी चाहिए ।

नाभि की देखभाल :

रोगाणु नाल के रास्ते शरीर में पहुंचकर बीमारी फैला सकते हैं। नाल को दो इंच की दूरी पर धागे के साथ बांध दें। बची हुई नाल को साफ कैंची / नयी ब्लेड से काट कर उस पर टिंक्चर आयोडिन/ बिटाडिन लगाये जिससे कि नाल में संक्रमण को रोका जा सके।

समय पूर्वक खीस पिलाने का महत्त्व :

नवजात के जन्म के बाद भैंस/गाय पहली बार जो दूध देती है यह खीस कहलाता है। नवजात में रोगों से लड़ने की क्षमता बहुत कम होती है। खीस पिलाना माँ से ऐसी रोग-प्रतिरोधक क्षमता बच्चे में पहुंचाने का एक प्राकृतिक तरीका है। खीस नवजात पशु को प्रकृति द्वारा दिया गया एक अमूल्य आहार है। इसमें अतिरिक्त पौषक तत्व होते हैं जैसे दूध से 7 गुना प्रोटीन, 40 गुना विटामिन-ए और प्रचूर खनिज तत्त्व आदि। खीस में मौजूद अधिक ग्लोबूलिन की मात्रा पहले 3 महीने तक रोगों से बचाने में सहायक होती है। खीस हल्का दस्तावर होता है जिससे आंतों का गंदा मल साफ हो जाता है।

जन्म के आधे घंटे से दो घंटे के भीतर नवजात पशु को खीस पिलाएं। खीस की मात्रा बच्चे के वजन के 1/10 भाग के बराबर होनी चाहिए। जिसे दिन में तीन से चार बार बांटकर देना चाहिए।

अगर किसी कारणवश खीस उपलब्ध ना हो तो किसी अन्य भैंस या गाय की खीस भी पिला सकते हैं। अन्यथा करीब 300 मि.ली. पानी में एक अंडा मिलाकर उसमें आधा चम्मच अरण्डी का तेल मिलाएं। इस घोल में 600 मि.ली. गाय का दूध, थोड़ी सी विटामिन-ए एवं 80 मि.ग्रा. आरियोमाइसिन मिलाएं। इस घोल को प्रत्येक बार ताजा बनाकर दिन में तीन बार बराबर-2 मात्रा में 5 दिन तक पिलायें।

समय पूर्वक कृमिनाशक दवा का उपयोग :

आन्तरिक परजीवियों से बचाव हेतु पैदा होने के 7-10 दिन के अन्दर कृमिनाशक दवा का उपयोग करना चाहिए। तदन्तर तीन माह की आयु तक हर 30 दिन बाद दवा पिलानी चाहिए । इसके पश्चात 6 माह की आयु तक दो माह के अन्तर पर तथा बाद में तीन माह के अन्तर पर कीड़े मारने की दवाई पिलानी चाहिए।

नवजात की आहार व्यवस्था :

नवजात पशु के उचित विकास हेतु उन्हें तीन माह की उम्र तक दूध पिलाना चाहिए। नवजात पशु को उत्तम आहार देने पर उनकी मृत्यु दर कम हो जाती है, शारीरिक भार वृद्धि अधिक होती है तथा यौवन जल्दी आता है। कटड़े-कटड़ी जैसे ही एक महीने के हो जाएं, उसे कोमल घास और 100 ग्राम शिशु आहार प्रति दिन देना चाहिए। बच्चों का आहार यदि निम्न स्तर का होगा तो उनसे क्षमता अनुसार उत्पादन प्राप्त नहीं किया जा सकता।

आवास प्रबन्ध व्यवस्था :

छोटे बच्चों को सर्दी से बचाना चाहिए । यदि छोटे बच्चों को खुले आवास में पालते हैं तो फर्श पर बिछावन का प्रयोग करें तथा रात के समय खुली जगह पर टाट लगाये। फर्श को गीला न होने दें तथा साफ रखें। नवजात बच्चों को सुरक्षित वातावरण में रखना चाहिये।

रोगों से बचाव व इलाज:

सफेद दस्त, निमोनिया, बाह्य परजीवियों द्वारा उत्पन्न रोग कटड़े-कटड़ियो की मृत्यु का प्रमुख कारण बनते हैं।

सफेद दस्त से बचाव हेतु जन्म के बाद जितनी जल्दी हो सके खीस पिलानी चाहिए। निमोनिया रोग से बचाव हेतु नवजात को ठंड से बचायें। किसी भी रोग के निदान के लिए पशु चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें।